بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 24.06.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहले ख़लीफ़ः हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने के युद्ध अभियानों का ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 24 जून 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के ज़माने के अभियानों का वर्णन हो रहा था। सातवें युद्ध अभियान के लिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस के लिए झंडा बांधा था तथा उनको शाम देश के सीमावर्ती क्षेत्र हम्पतीन की ओर भेजा। हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस का परिचय यह है कि आपका नाम ख़ालिद एवं उपनाम अबू सईद था। हज़रत ख़ालिद अति पूर्व इस्लाम लाने वालों में से थे। कुछ का बयान है कि आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के बाद इस्लाम क़बूल किया था तथा आप तीसरे अथवा चौथे मुसलमान थे। हज़रत ख़ालिद के इस्लाम क़ुबूल करने की घटना यह है कि आपने सपने में देखा कि आप आग के किनारे पर खड़े हैं तथा उनका बाप उन्हें उसमें गिराने का प्रयास कर रहा है और आपने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको कमर से पकड़े हुए हैं कि कहीं आप आग में न गिर जाएँ। हज़रत ख़ालिद इस पर घबरा कर जाग उठे तथा कहा कि अल्लाह की क़सम यह सपना सच्चा है। अतः हज़रत ख़ालिद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा निवेदन किया कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, आप किस तरफ़ बुलाते हैं? आँहज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ख़ुदा की ओर बुलाता हूँ, जो एकेला है तथा उसका कोई साथी नहीं और यह कि मुहम्मद उसका बन्दा और उसका रसूल है और यह कि तुम उन पत्थरों की पूजा छोड़ दो जो न सुनते हैं, न देखते हैं तथा न ही हानि पहुंचा सकते हैं और न लाभ पहुंचा सकते हैं तथा वे नहीं जानते कि कौन उनकी पूजा करता है और कौन नहीं करता। इस पर हज़रत ख़ालिद ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि कोई इबादत का अधिकारी नहीं सिवाए अल्लाह के और मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ख़ालिद के इस्लाम लाने पर अत्यंत प्रसन्न हुए।

जब मुसलमानों ने हब्शा की ओर हिजरत की तो हज़रत ख़ालिद बिन सईद भी उनके साथ चले गए। हज़रत ख़ालिद ख़ैबर के युद्ध वाले ज़माने में हब्शा से हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब के साथ नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पहुंचे। ख़ैबर की लड़ाई में शामिल नहीं हुए थे किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने युद्ध में विजय से प्राप्त धन सम्पत्ति में उनको भी भाग दिया। उसके बाद मक्का की विजय, हुनैन तायफ़ व तबूक इत्यादि के युद्धों में निरन्तर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग संग घोड़े पर सवार रहे। आप बदर की लड़ाई में शरीक नहीं हो सके थे इससे वंचित रहने के कारण सदैव उनको खेद रहा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निवेदन किया- या रसूलुल्लाह, हम लोग आपके साथ बदर के युद्ध में शरीक नहीं हो सके। आप स. ने फ़रमाया- क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं कि लोगों को एक हिजरत का सौभाग्य मिले तथा तुमको दो हिजरतों का। वह्यी को लिखने वालों में हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस का नाम भी आता है। हज़रत ख़ालिद बिन सईद को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यमन के सदक़ात वसूल करने पर नियुक्त किया था। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन तक आप उसी पद पर रहे।

हज़रत अबू बकर ने जब मुर्तदों का विधवंस करने के लिए झंडे बांधे तो एक झंडा हज़रत ख़ालिद बिन सईद के लिए भी बांधा तथा उन्हें तैमा नामक स्थान की ओर जाने का आदेश दिया और फ़रमाया कि अपनी जगह से न हठना तथा आस पास के लोगों को अपने से मिलने का निमंत्रण देना तथा केवल उन लोगों को स्वीकार करना जो मुर्तद न हुए हों और किसी से लड़ाई न करना सिवाए इसके जो तुमसे लड़ाई करे, यहाँ तक कि मेरे निर्देश पहुंच जाएँ। हज़रत ख़ालिद तैमा में ठहर गए तथा आस पास की अनेक जमाअतें उनसे आ मिलीं। रोमियों को मुसलमानों की इस विशाल सेना की सूचना मिली तो उन्होंने अपने आधीन अरब के लोगों से शाम के युद्ध के लिए सेनाएं मांगीं। हज़रत ख़ालिद ने रोमियों की तय्यारी तथा अरब क़बीलों के आगमन के विषय में हज़रत अबू बकर रज़ी. को सूचित किया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जवाब लिखा कि तुम आगे बढ़ो, तनिक भी भय मत करो तथा अल्लाह से सहायता मांगो। हज़रत ख़ालिद यह जवाब मिलते ही दुश्मन की ओर बढ़े तथा जब उनके निकट पहुंचे तो शत्रु पर कुछ ऐसी घबराहट तारी हुई कि सब अपने स्थान छोड़ कर भाग गए। हज़रत ख़ालिद ने दुश्मन के स्थान पर कब्ज़ा कर लिया। अधिकांशतः वे लोग जो हज़रत ख़ालिद के पास जमा थे, मुसलमान हो गए। इस सफलता की सूचना हज़रत ख़ालिद ने हज़रत अबू बकर को दी। हज़रत अब् बकर ने लिखा कि तुम आगे बढ़ो किन्तु इतना आगे मत निकल जाना कि पीछे से दुश्मन को हमला करने का अवसर मिल जाए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आठवाँ युद्ध अभियान मुर्तद विद्रोहियों के विरुद्ध हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ का था। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक झंडा हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ के लिए बांधा तथा उनको आदश दिया कि वे बनू सलीम तथा बनू हवाज़न का मुक़ाबला करें। हज़रत अबू बकर ने ख़लीफ़ः नियुक्त होने के बाद हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ को सलीम के उन अरबों पर जो इस्लाम पर क़ायम थे, निगरान बनाया था। ये निष्ठावान तथा जोशीले कार्यकर्ता थे। इन्होंने ऐसे प्रभावित करने वाले भाषण दिए कि बनू सलीम के बहुत से अरब इनसे आ मिले। एक अन्य रिवायत में है कि सलीम की यह स्थिति थी कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात उनमें से कुछ लोग मुर्तद हो गए तथा इंकार करने लगे तथा उनके कुछ लोग अपने क़बीले के अमीर मअन बिन हाजिज़ अथवा कुछ कथनों के अनुसार उनके भाई तरीफ़ा बिन हाजिज़ के साथ इस्लाम पर क़ायम रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू बकर से रिवायत है कि बनू सलीम का एक व्यक्ति हज़रत अबू बकर के पास आया, उसे फ़जा कहा जाता था, उसका नाम अयास बिन अब्दुल्लाह था। उसने कहा कि मैं मुसलमान हूँ, मैं इन लोगों के विरुद्ध जिहाद करना चाहता हूँ जो मर्तद हो

गए हैं। आप मुझे सवारी प्रदान कर दें तथा मेरी सहायता कर दें। हज़रत अबू बकर ने उनको सवारी दी तथा शस्त्र दिए तथा दस मुसलमान हथियारों से सुसज्जित उनके साथ कर दिए। फ़जा अपने क़बीले की ओर चला तथा रास्ते में मुर्तद अरबों को अपने साथ मिलाता रहा। जब उसका गिरोह बढ़ गया तो उसने पहले अपने मुसलमान साथियों की हत्या की तथा उनका सारा माल लूट लिया, फिर उसने विनाश करना आरम्भ कर दिया, कभी इस क़बीले पर छापा मारता कभी उस क़बीले पर। हज़रत अबू बकर को इसकी सूचना मिली तो उन्होंने हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ को लिखा कि तुम अपने पास उपलब्ध मुसलमानों को साथ ले कर जाओ तथा उसका वध कर दो अथवा बन्दी बनाकर मेरे पास भेज दो। हज़रत तरीफ़ा बिन हाजिज़ उसके मुक़ाबले पर गए, दोनों गुटों की आपस में मुठभेड़ हुई, हज़रत तरीफ़ा ने फ़जा को बन्दी बनाकर हज़रत अबू बकर की सेवा में पेश किया। हज़रत अबू बकर ने हज़रत तरीफ़ा को आदेश दिया कि इसको बक़ी नामक स्थान पर ले जाओ तथा आग में जला डालो। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह व्यवहार इस लिए उससे किया गया कि वह मुसलमानों के साथ यही अत्याचार करता रहा था।

नवाँ युद्ध अभियान मुर्तद विद्रोहियों के विरुद्ध हज़रत अला बिन हज़रमी का था। हज़रत अबू बकर ने एक झंडा हज़रत अला बिन हज़रमी को दिया तथा उनको बहरीन जाने का आदेश दिया। हज़रत अला बिन हज़रमी का परिचय यह है कि आपका सम्बंध यमन के इलाक़े हिज़्रे मौत से था। दावते इस्लाम के आरम्भिक ज़माने में इस्लाम से सुशोभित हुए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने राजाओं को तबलीग़ी पत्र भेजे तो बहरीन के राजा मंज़र बिन सावा के पास पत्र ले जाने की सेवा हज़रत अला बिन हज़रमी के हवाले हुई। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आपको बहरीन का निगरान नियुक्त फ़रमा दिया। हज़रत अला बिन हज़रमी ने उन्हें इस्लाम की दावत दी तो मंज़र बिन सावा ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन तक हज़रत अला बहरीन के निगरान रहे, बाद में हज़रत अबू बकर की ख़िलाफ़त में भी इसी पद पर क़ायम रहे तथा हज़रत उमर ने भी अपनी ख़िलाफ़त में इन्हें इसी काम पर नियक्त किए रखा, यहाँ तक कि हज़रत उमर की ख़िलाफ़त के दौर में इनका देहान्त हो गया। हज़रत अला ऐसे दिव्य अस्तित्व थे कि उनकी दुआएँ क़बूल हो जाती थीं इसके विषय में वे प्रसिद्ध थे। दुआ की क़बूलियत के बारे में उनके विषय में विभिन्न रिवायतें आती हैं। हज़रत अबू हुरैरा कहा करते थे कि उनकी विशेषताओं तथा दुआओं की क़बूलियत के बारे में मैं उनसे बड़ा प्रभावित हूँ।

बहरीन के जो हालात हैं उनके बारे में वर्णन मिलता है कि बहरीन देश हीरा के राजाओं के आधीन था तथा हीरा के राजे किसरा राजाओं के आधीन थे। हीरा इस्लाम से पहले इराक़ के राजाओं की राजधानी था। बहरीन के तटीय तथा व्यापारिक नगरों में मिली जुली आबादी थी। तटीय नगरों के पीछे तीन बड़े क़बीले तथा उनकी अनेक शाखाएँ आबाद थीं। एक बकर बिन वायल, दूसरा अब्दुल क़ैस तथा तीसरा रबीअः। अब्दुल क़ैस के दो प्रतिनिधि मंडल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। एक मंडल पाँच हिजरी में, जिसमें तेरा अथवा चौदह लोग शामिल थे और दूसरा मडल नौ हिजरी में जिसमें चालीस लोग शामिल थे। बहरीन के इलाक़े हिज्र के फ़ारसियों, ईसाईयों तथा यहूदियां ने अत्यंत अप्रसन्न चित से जिज़्या देना स्वीकार किया था। बहरीन की शेष बस्तियाँ तथा नगर ग़ैर-मुस्लिम रहे तथा ये लोग जब भी अवसर मिलता, समय समय पर विद्रोह करते रहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद क़बीला अब्दुल क़ैस अपने वचन पर जमा रहा तथा इस्लाम से विमुख होने की वबा उन तक न पहुंची। शेष अरब तथा

अरब से बाहर के लोग सबने मदीने के शासन को नष्ट करने के लिए कमर कस ली। ईरानी शासन ने उनके साहस को बल दिया तथा विद्रोह का नेतृत्व एक बड़े अरब लीडर मंज़र बिन नुअमान को सौंप दिया। किसरा ने मंज़र बिन नुअमान को राज मुकुट प्रदान किया तथा पहनाया तथा एक सौ घुड़सवार दिए तथा सात हज़ार पैदल सेना तथा सवार दिए तथा उसे क़बीला बकर बिन वायल के साथ बहरीन जाने का आदेश दिया। सबसे पहले उन्होंने क़बीला अब्दुल क़ैस को इस्लाम से विमुख करने का प्रयत्न किया, परन्तु विफल रहे। अतः शक्ति के दबाव से उन्हें पराधीन करना चाहा। अब्दुल क़ैस क़बीले के लोग अपने सरदार हज़रत जारूत बिन मुअल्ला के पास चार हज़ार की संख्या में अपने दोस्तों तथा अपने सेवकों के साथ एकत्र हुए तथा क़बीला बकर बिन वायल अपने नौ हज़ार ईरानियों और तीन हज़ार अरबों के साथ उनके निकट हुए, फिर दोनों पक्षों के बीच घोर युद्ध हुआ तथा क़बीला बकर बिन वायल को भारी हानि उठानी पड़ी। फिर उन्होंने दूसरी बार घोर युद्ध किया। अबकी बार अब्दुल क़ैस को भारी हानि उठानी पड़ी। इसी तरह वे एक दूसरे से बदला लेते रहे तथा उनके बीच कई दिनों तक युद्ध होता रहा यहाँ तक कि बहुत से लोगों की हत्या हो गई तथा अब्दुल क़ैस क़बीले की जनता ने बकर बिन वायल से शांति का निवेदन किया। अब्दुल क़ैस ने जान लिया कि अब वे बकर बिन वायल के विरुद्ध कोई सामर्थ्य नहीं रखते, अतः वे पराजित हुए यहाँ तक कि वे हिज्र की ज़मीन में अपने जवासा नामक क़िले में बन्द हो गए। बनू बकर बिन वायल अपने ईरानी लोगों के साथ आगे बढ़े तथा उनके क़िले तक पहुंच गए तथा उनको घेर लिया तथा उनकी खाद्य सामग्री रोक ली।

जब हज़रत अबू बकर को अब्दुल क़ैस की दशा का ज्ञान हुआ तो आपको भारी खेद पहुंचा। आपने हज़रत अला बिन हज़रमी को बुलाया तथा सेना का नेतृत्व उनको दिया तथा दो हज़ार महाजिर व अन्सार के साथ बहरीन की आर अब्दुल क़ैस की सहायता के लिए जाने का आदेश दिया तथा निर्देश दिया कि अरब के क़बीलों में से जिस क़बीले के पास से निकल कर तुम जाओ तो उसे बनू बकर बिन वायल से युद्ध करने की प्रेरणा देना, क्यूँकि वह ईरान के बादशाह किसरा द्वारा नियुक्त मंज़र बिन नुअमान के साथ आए हैं, उन्होंने अर्थात उस बादशाह ने उसके सिर पर ताज रखा है और अल्लाह के नूर को मिटाने का निश्चय किया है तथा अल्लाह के दोस्तों का वध किया है। अतः तुम ला हौला वला क़ुव्वतः इल्लाह बिल्लाह पढ़ते हुए रवाना हो जाओ। हज़रत अला बिन हज़रमी हज़रत अबू बकर के आज्ञा पालन में रवाना हो गए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- शेष भाग इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131